Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.08, August,2025

उत्तराखण्ड में स्थित ‘‘पौड़ी जिले’’ के लोकगीतों में पर्यावरणीय चेतना एक साहित्यिक अध्ययन

* अवधेश बिष्ट (शोध छात्र) एवं डा0 पूनम देवी
हिन्दी विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय पोखड़ा, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

****

शोध सार:- *उत्तराखण्ड देवभूमि भूमि में विद्वमान पौड़ी जिले से सम्बन्धित प्राकृतिक संसाधनों और जीवन के प्रति जागरूकता का प्रतीक है। लोकगीत पर्यावरण के प्रति जागरूकता और संरक्षण का संदेश देते हैं। साथ ही वे प्रकृति के साथ मानव सम्बन्ध को भी दर्शाते हैं। पौड़ी क्षेत्र में लोकगीत प्रकृति के साथ गहरा सम्बन्ध दर्शाते हैं। नदियों, जंगलों, और पहाड़ो के प्रति सम्मान एवं नैसर्गिक प्राकृतिक सौन्दर्य प्रकृति यहाँ की सस्कृति को दिखाती है। लोकगीत सामाजिक चेतना को जगाती है। पर्यावरण संरक्षण के लिए एकजुटता और सभी अपनी. सम्पूर्ण भागीदारी यहाँ के सौन्दर्य को बनाने में तत्पर खड़े रहते हैं।*

Keywords: ***उत्तराखण्ड, देवभूमि, पौड़ी जिला, प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण जागरूकता, लोकगीत, लोकसंस्कृति, मानव-प्रकृति सम्बन्ध, नदियाँ, जंगल, पहाड़, नैसर्गिक सौन्दर्य, सामाजिक चेतना, पर्यावरण संरक्षण, सामूहिक भागीदारी***

****

प्रस्तावना:- पौड़ी जिले के लोकगीतों में पर्यावरणीय चेतना एक साहित्यिक अध्ययन लोकगीतों में पर्यावरण से जुड़ी विभिन्न भावनाओं, प्रतीकों और विचारों की पहचान करना है। यह अध्ययन यह भी बताता है कि, कैसे ये गीत पर्यावरणीय चेतना को बढ़ावा देते हैं और सामाजिक जीवन में उनका योगदान कैसे होता है। लोकगीत वह गीत है जिन्हें लोग अपने जीवन की धारा से जोड़कर संस्कृति को आगे बढ़ा रहे हैं इसमें लोक कलाकार लोक गीतकार और लोक गायकों का बहुत बड़ा योगदान पौड़ी जिले के लोकगीतों में पर्यावरण चेतना एक महत्वपूर्ण विषय है। ‘‘ये गीत अक्सर प्रकृति के साथ मानव के सम्बन्ध, प्राकृतिक संसाधनों का महत्व, और पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरुकता को दर्शाते हैं’’ कि कैसे प्राकृतिक संसाधन हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण सरंक्षण:- लोकगीत पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरुकता को बढ़ावा देते हैं। वे जल संरक्षण, वृक्षारोपण, और प्रदूषण कम करने जैसे विषयों पर प्रकाश डालते हैं।

प्राकृतिक आपदाए:- लोकगीत प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ और सूखा भूकम्प के बारे में भी बताते हैं। वे इन आपदाओं से निपटने के तरीकों और लोंगों की प्रति क्रियाओं को दर्शाते हैं।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता:- लोकगीत पर्यावरण के प्रति जागरुकता को बढ़ावा देते है वे प्रकृति के महत्व आौर उसके संरक्षण की आवश्यकता को दर्शाते हैं।

साहित्यिक अध्ययन का महत्व:-

सास्कृतिक विरासतः- लोकगीत एक सांस्कृतिक विरासत है। वे हमारी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक मूल्यों को दर्शाते हैं। लोकगीत का अध्ययन हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझने और संरक्षित करने में मदद करता है।

पर्यावरण जागरुकता:- लोकगीतों के अध्ययन से हमें पर्यावरण के प्रति जागरूकता मिलती है। वे हमें पर्यावरण के महत्व को समझने और उसके संरक्षण के लिए प्रेरित करते है।

सामाजिक परिवर्तन:- लोकगीत सामाजिक चेतना को जागृत करते है। वे सामाजिक मुद्दो पर ध्यान आकृर्षत करते हैं और सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणा देते हैं।

।। उत्तराखण्ड की धरती है, पावन मेरी माँ की धरती।।

।। पानी बचाओ धरती बचाओं।।

यह गीत प्रकृति संरक्षण के महत्व को बताता है। लोकगीत के विषय सामान्य मानव की सहज संवेदना से जुड़े हुये है। इन गीतों में प्राकृतिक सौन्दर्य सुख-दुःख और विभिन्न संस्कारों और जन्म मृत्यु को बड़े ही हृदयस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया गया गया है। इस प्रकार लोकगीत शब्द का अर्थ है।

1-लोक में प्रचलित गीत।

2-लोग रचित गीत।

3-लोक विषयक गीत।

सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ:- लोकगीतों में पर्यावरण चेतना की अभिव्यक्ति के तरीकों का विश्लेषण करना यह जानना है कि कैसे ये गीत सामाजिक जीवन और पर्यावरण के बीच सम्बन्ध को दर्शाते है। लोकगीतों में व्यक्त की गई पर्यावरणीय जागरूकता और मूल्यों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों को प्रेरित करने की क्षमता का मूल्यांकन करना है।

लोक गीत की परिभाषा:- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं है बल्कि नगर व गावों में फैली हुई समुचित जनता है। जिसके व्यवहारिक ज्ञान का आधार साधारण पोथिया नहीं है। ये लोग नगर में परिष्कृत रूचि सम्पन्न तथा संस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभयस्थ होते है।

डा0 सतेन्द्र:- वह गीत जो लोक मानस की अभिव्यक्ति भी है लोकगीत के अन्तर्गत आएगा।

डा0 तेज नाायण:- लोकगीत मनुष्य की प्राकृत भावना की अभिव्यक्ति से जन्मा है आदमी वातावरण में पला है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार:- लोक गीतों में जन-जीवन की सच्ची झाकी निहित है।

डा0 प्रियतम कृष्ण कौल:- लोकगीत जनमानस की अनुभूतियों की लयपूर्ण अभि व्यक्ति है और वह जीवन की यथार्थ भावनाओं को प्रस्तुत करते है।

शोध पत्र का उददेश्य:- इस प्रस्तावित शोध कार्य का मुख्य उददेश्य उत्तराखण्ड में लोक गीतों की युगो-युगों से चली आ रही प्रथा एवं संस्कारों को जन-जन तक पहुचाना है इस शोध कार्य को प्राकृतिक चेतना प्रकृति एवं सांस्कृतिक सभ्यता को गहराई से अध्ययन करना है।

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण के दो प्रखण्डों में विभाजित किया जाता है। प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण तकनीकी मानव द्वारा आर्थिक उददेश्य और जीवन में विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ छेडछाड़ पृथ्वी पर पाए जाने भूमि जलवायु पेड़ -पौधे एवं जीव-जन्तुओं - वन्य पशुओं का समूह जो हमारे चारों ओर है। पर्यावरण के ये जैविक और अजैविक घटक आपस में अन्तक्रिया करते हैं। जिसे हम पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में जानते हैं। इस शोध कार्य के द्वारा मानव सभ्यता प्रकृति एवं पर्यावरण को बचाने का अथक प्रयास किया गया है। लोकगीतों के द्वारा अपनी संस्कृति सभ्यता और लोकगीत के माध्यम से जन-जन तक अपनी मिट्टी की महक को पहुंचाता है, इस शोध पद्धति में भविष्य में आने वाली नई पीढ़ी के लिए यह शोध कार्य प्रेरणा का स्रोत एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगा। जो कि भविष्य में अनुसंधान छात्रो के लिए उपयोगी सिद्ध होगा । इन लोकगीतों के माध्यम से पर्यावरण सम्बन्धित प्रतीकों एवं भावनाओं तथा विचारों

का पता लगाना जैसे कि प्रकृति के प्रति उसके संरक्षण की आवश्यकता और पर्यावरण को मानव गतिविधियों के प्रभाव को दर्शाता है।

शोध पत्र का महत्व:- लोक गीतों में लोकगीत किसी भी देश की सभ्यता संस्कृति और विचारों से हमें परिचय कराते हैं। लोक साहित्य के विकास के लिए इसका अत्यधिक लाभ पहुँचाता है। इससे हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में (रीति-रिवाज) रहन सहन, पूर्व, धर्म, इतिहास, आदि की पहचान होती है। जिससे वर्तमान की काफी चीजों में सुधार लाए जा सकते हैं।

कई मामलो में इन गीतों से वर्तमान के कवियों को अपनी रचना करने में काफी मदद मिलती है। इन लोकगीतों से हमें अपने साहित्य को सुदृढ़ करने का अवसर मिलता है।

इससे हमारे समाज परिवार और रिश्तेदारों से सम्बन्ध मेल मिलाप पवित्र स्नेह तथा गृहस्थ जीवन की समस्याओं आदि की जानकारी मिलती है। साथ ही लोक समाज के इतिहास घटनाओं धार्मिक प्रवृत्तियों तथा तत्कालीन मनोभावों आदि की भी जानकारी होती है। इसलिए लोकगीत कभी पुराने नहीं होते और नहीं ही इन्हें भुलाया जा सकता है इसे लोक समाज के लिए पीढ़ी मौखिक परम्परा में जीवित रहते हैं। और शायद इसलिए यह प्राचीन काल से आज तक भी लोकभाषा में गाये जाते आ रहे हैं। प्रत्येक लोकगीत उस क्षेत्र के उस राज्य की रीढ़ की हड्डी होती है। जो जन मानष की द्योतक है और इसीलिए लोकगीत जन्मों जन्मोत्तर का चिरस्थायी बना रहता है। अनुसंधान क्रिया विधि शोध कार्य हेतु अनुसंधान कर्ता द्वारा उत्तराखण्ड के लोकगीतों में पर्यावरणीय चेतना एक साहित्यिक अध्ययन विषय का चयन किया. गया है। इस विषय को शोध प्रबन्ध के रूप में चयन करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि उत्तराखण्ड में लोकगीतों का समाज के परिपेक्ष्य में तथा पर्यावरण चेतना का सम्बन्ध में क्या, विकास हुआ है तथा आने जाने वाले समय में इन गीतों की क्या महत्ता होगी। इस विषय को आधार बनाकर शोध विषय का चयन किया गया है। इन गीतों में पर्यावरण से सम्बन्धित जितने भी पक्ष है। उन्हें उजागर करने का अथक प्रयत्न किया गया जो आने वाले समय नई पीढ़ी के लिए नितान्त उपयोगी सिद्ध होगें। इसके साथ ही यह अन्य शोध छात्रों के लिए अनुसंधान का भी विषय बनेगा।

शोध साहित्य का सर्वेक्षण शोध का उद्देश्य समाज के किए. कुछ नया और उपयोगी बनाना है। अनुसंधान का यह चरण अनुसंधान विद्वान का अनुसंधान का क्षेत्र के सभी विवरणों से अवगत कराता है।

1-आधार पेपर से यात्रा,

2-साहित्य सर्वेक्षण का उद्देश्य

3-पृष्ठ भूमि।

4-शोध पद्धति।

5-लक्ष्य को परिभाषित करना।

6-मुख्य शिक्षण चरण।

7-अनुसंधान साहित्य सर्वेक्षण क्रिया विधि।

निष्कर्ष:-लोक साहित्य लिखने पढ़ने में एक शब्द है पर वस्तुतः यह दोहरे भावों का गठबंधन है लोक और साहित्य एक कुसरे के सम्पूरक, एक दूसरे में सम्मिलित जहा ँ लोक होगा वहाँ उसकी संस्कृति और साहित्य होगा।

विश्व में कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ लोक है और उसकी संस्कृति न हो। मानव मन के उदगारों और उनकी सूक्ष्मतम अनुभूतियों का सजीव चित्रण यदि कहीं मिलता है तो वह लोक साहित्य में ही मिलता है। क्योंकि हम सदैव कहीं अपनी मिटटी, बोली, भाषा, जलवायु तथा सांस्कृतिक संवेदना से जुड़े रहते। अतः

हमें जो भी उपलब्ध होता है वह गहन अनुभूतियों तथा अभावो के कटुसत्यों पर आधारित होता है जिसकी छाया में वह पतला और विकसित होता है।

लोक साहित्य हमारी सभ्यता का संरक्षण भी है, संगम भी है। वह रीढ़ है उस लोक संस्कृति की जिसका पूरा देश द्योतक है। साहित्य का केन्द्र लोक कमल है। इसका पूरा ताना-बाना लोकहित के आधार पर खड़ा मनुष्य पशु - पक्षी, पर्यावरण का अहित भी नहीं सोच सकता। उसे प्रकृति पर्यावरण, वनस्पति की पीड़ा का भी भान होता है। चराचर जगत के प्रति मैत्रिक का यह विस्तार साहित्य ही तो है। जो प्रकृति की गोद में प्रकृति संरक्षण में मनाये जाते हैं। संवेदनशीलता का नया वातावरण हमे प्रदान कर पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए उत्प्रेरित करते हैं। भारतीय जन-जीवन में वृक्षों को देवता की अवधारणा की परम्परा के फलस्वरूप इनकी पूजा-अर्चना की जाती है। पीपल के वृक्ष में श्रीकृष्ण ने अपनी विभूति बनायी है। वृक्ष में विष्णु को तने में केशव, शाखा में नारायण, पात्रो में श्री हरि और फलों में सभी देव-देवताओं, को विद्यमान माना जाता है, विभिन्न तथ्यों एवं लोक जीवन की शैली की के आधार पर निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि वृक्ष हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1-12 खण्डों में उत्तराखण्ड का इतिहास (शिव प्रसाद डबराल, चारण)

2-दिनेश चन्द्र बलूनी 2005 (उत्तराखण्ड के लोक गाथा-गीत)

3-रेखा धस्माना उनियाल (प्रसिद्ध उत्तराखण्ड लोक गायिका)

4-गोविन्द चातक 1996 (गढ़वाली लोक गाथाएं) (नई दिल्ली तक्षशिला प्रकाशन)

5-गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य (डा॰ॅ0 हरिदत्त भट्ट ‘‘शैलेश’)

6-उत्तराखण्ड़ के लोक देवता (डी0पी0 शर्मा) प्ैठछ 81.7988.031.प्

7-उत्तराखण्ड़ संगीत एवं संस्कृति (डा॰ॅ0 सरिता पाठक यजुर्वेदी) प्ैठछ 978.81.85382.11.1

8-जुगल किशोर पेटशाली (कुमाऊनी लोकगीत)।

9-सुन्दर लाल बहुगुणा (धरती की पुकार)।

10-प्रो0 डी0 जी0 शर्मा (उत्तराखण्ड़ की लोकोपचार परम्पराऐं)।

*Corresponding Author: Awdhesh Bisht
E-mail: awdheshbisht123@gmail.com
Received: 03 July,2025; Accepted: 22 August,2025. Available online: 28 August, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License